दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनौ रघुबर बिमलजसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहिन तनु जानिके सुमिरौ पवन–कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाइ

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुं लोक उजागर
राम दुत अतुलित बल धामा । अन्जनि–पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेउ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महाजग बंदन ॥
बिधावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रुप धरि लंक जरावा ॥
भीम रुप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज संवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाइ । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाइ
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मदि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहां ते । कबि कोबिद कहि सके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु । लील्यो ताहि मधुर फल जानु ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहु को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांक तें कांपै ॥
भुत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पिरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट ते हनुमान छुडावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा.
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाइ । जहां जन्म हरि–भक्त कहाइ ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।
संकट कटै मिटै सब पिरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाइ । कृपा करहु गुरु देव की नाइ ॥
जो सत बार पाठ कर कोइ । छुटहि बंदि महा सुख होइ ॥
जो यह पढै हनुमान चालिसा । होय सिद्धि साखि गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मुरति रुप ।
राम लखन सिता सहित हृदय बसहु सुर भुप ॥